



186
San. H. 11. 11.
C. 11. 11. 11.

१४॥ ग (दा४) भयनम ४॥ ॥ २४॥
स्वस्मानीवग ४॥ विनाचम्य ४ ॥
१५॥ नमः ३ स्वस्मने ॥ आदीस्माः
नादिभुक्कवसुपनिधाने नि
यकर्मकृत्वा ॥ ॥ तंगावग
मालरुते ॥ गित्वाचम्य ॥ पूष

राजन ॥ ॥ अथत्यादि ॥ वाक्क
॥ यजमानानी स्वस्मानीवगक
र्मविनिमित्तकमधुलूपयार्
जन समर्थयामि ॥ सिद्धिस्तु
क्रियालभुमि ॥ वाक्क (धनपू

स्य ह्युत्तरार्धे ॥ वाङ्मननवदा
वर्तन ॥ विनायक ॥ ॥ अथादि
॥ वाक् ॥ सूर्यार्थ ॥ ॐ अरु
ति ॥ पूर्य नमः ॥ अथवा ॥ पू
जा ॥ ॐ मम वरुणमिनि ॥ गु
ननमस्कान ॥ ॐ अथ (धुनि ॥

मय श्रीमन्तु न्नामः ॥ या न
यामरुत्वा ॥ ॥ वि (धर्म) नामः
॥ ॐ स्वस्ती अस्माकं ॥ ॐ द
वीवन कामिनी अगुप्त्यो नमः
॥ ॐ मिश्रव न्धनार्थ नार्थे नर्तनी
त्यो नमः ॥ ॐ ये ला कचि कामि

मध्वमाह्यां वषट् ॥ ॐ दग्धादिग्वा
यूवगधा निधी अनामिकाह्योह
॥ ॐ च (धुचधुमथनायन्येकनि
काह्यां वीषट् ॥ ॐ स्वह्मनीकनग
नयुष्माह्यां नमः ॥ ॐ वंद्यदयः

दि ॥ षडङ्ग ॥ ॥ जूर्धयापूजा
॥ ज्रात्मपूजा ॥ दवादिह्मनं ॥ ॐ
स्वस्तिनं न्दगि ॥ यक्षिभृगह्मनं
॥ ॐ ययः पृथिव्या ॥ ॐ दधिका
प्रा ॥ ॐ न आसि ॥ ॐ मधूवागा ॥

ॐ नमः श्री ह वायव ॥ धुञ्जादक
स्नानं ॥ ॐ य विरुक्षा ॥ चन्दनादि ॥
ॐ य दडक ॥ सिन्दूर ॥ ॐ त्वैक वि
षदा ॥ ऊह्यायवीग ॥ यूर्य ॥ ॐ या
४रुलिनी ॥ ॐ शास्त्रम् नमः ॥

मे/ह
नि

संपूर्णकलशायनमः ॥ ॥ गग
दानार्चनी ॥ ॐ गलायामि ॥ १० ॥
विशेष ॥ ॐ स्वस्ति नमः ॥ ॐ
शास्त्रम् ॥ ॐ (म) यै नमः ॥ ॐ याव
कान्त ॥ ॐ यावै नमः ॥ ॐ रू मा

त्रुडाथति ॥ ॐ उमाथेनमः ॥ ॐ अस्म
कन ॥ ॐ गिनिस्तुगथेनमः ॥ ॐ स्व
स्तिनः ॥ ॐ धात्रेनमः ॥ ॐ य
स्मिन्नुचः ॥ सामयस्तुलं विद्यस्मिन्नु
गिस्तिनानथनाथायिवात्राः ॥ यस्मि

स्त्रिक्तं सर्वभर्तृयुजानां कृत्तममनः
शिवर्षीकल्यमस्तु ॥ ॐ विधात्रेनमः
॥ ॐ द्यामालखीर्न न निद्रं माहिं
ही ॥ यथिवा सुमृव । अयं हि
त्वास्वधिगिक्तुगिजानः ॥ यथिनाय

महर्गुहोतु गमय ॥ ॐ सुप्रतायेनम
॥ ॐ अस्मै नमः ॥ ॐ शिवाय
नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥

मादि ॥ ६ ॥ मासादि ॥ २२ ॥ सगु
हः वलिः सूर्यादि ॥ (गमग्रसः
शा लक्ष्मीः मगपूजा ॥ ॐ यदुस्य
सि ॥ धूपः दीपः नैवद्य ॥ अन्नप
न ॥ ॐ मनाः कृति ॥ युतिष्ठा ॥ ॐ नि

जयः ॥ ॐ नमः ॥

वेदाद्यर्थं ॥ ॥ जू(थावृत्तविः
धि॥ धनमूढपनिभासितक ३॥
दाखालखान् जू दनयत्तसू थू
काअनखाल् जू गमनयक ॥
संकल्पः ॥ जू द्यादि ॥ यजमाना

नापूतयो ज्ञादिवृद्धि मोलाग्नसूक
नपापद्वयत्वं जू वेधवात्वाहीय
सिद्धि स्वर्गलोकयापि पूर्वकका
मनया ग्राउमानरुध्वनसूखी
त्यर्थः स्वस्मानीवृत्तकर्तुं ग्रासूया

य नृषा र्धनम ॥ भा र्हा धका न
ति ॥ ॥ न्यास ॥ गारुड पूजा ॥ नृ
सूजा ॥ ॥ गंगादात्र पूजा ॥ पूर्व
॥ पूर्वदात्राय नमः ॥ ॐ नन्दिन
नमः ॥ मरु कालाय २ ॥ दक्षिण

॥ हृदिनि २ ॥ ॐ गणपतये २ ॥ प
श्चिम ॥ ॐ वृषाय २ ॥ ॐ स्कन्दाय
२ ॥ उत्तर ॥ ॐ देव्यै २ ॥ ॐ चन्द्राय
२ ॥ ॥ आसन पूजा ॥ ॐ आधान
धक्यै २ ॥ ॐ अनन्तनाय २ ॥

ॐ कृष्णाय नमः ॥ ॐ नमः
 नाय २ ॥ यद्वा नाय २ ॥ यद्वा नाय
 नाय २ ॥ कृष्णाय नाय २ ॥ ॐ क
 र्त्तुं का नाय २ ॥ धर्माय २ ॥ ह
 नाय २ ॥ वेनाह्नाय २ ॥ नेष्ट्याय २ ॥
 मन्त्राय २ ॥

ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 य २ ॥ अर्धर्माय २ ॥ अर्धर्माय
 य २ ॥ ॐ अर्धर्माय २ ॥ ॐ मि
 हा नाय २ ॥ यद्वाय २ ॥ ॐ
 हृदयादि ३ ॥ आवाहनादि ॥ ॥
 स्नानं ॥ ॐ ह्रीं गं दि स त्रि न ४ यु र्ध
 ग्गयमाचमनीयं मङ्गलं कलशं च

विलेपन॥ अग्नौ ब्रह्म कर्म कर्म कर्म नत्तममाचरत॥
मूलं यत्तत्तमाचरन् कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म
नन्दनः पुत्रं गमय ॥ सिद्धं न ॥ सिन्दू
नं नागं संहृतं गिरा लंका नर्षय
॥ पूर्णं धृतं सूनस्तातिः यय च सर्व
मङ्गलं ॥ अक्षय ॥ अक्षयं प्रागना
मायः प्रागनं पुष्टिदायकं । दि० ॥

ध्वनिप्रयच्छत्यसर्वेषां वनवर्द्धन ॥
 वर्द्ध ॥ वरुसंश्रुता गान्धर्वि कोऽय
 मयमूरुमं । युदलयवयवधि वि
 चिरुवनयधिव ॥ ॥ आगमने
 या द्वाहात च्छुललानके ॥ ध्या

न ॥ ॐ सुवर्णवर्णदीपाङ्गुलिभङ्गा
कमलानना । मङ्गलपद्मासनम् ॐ
सर्वलोकानुरूपिणी ॥ नीलात्यल
यावाम् दक्षिणवदनदाष्टुली । स्वर्ण
वर्णधनायाश्च वामदक्षिणयोः क

मातृ ॥ सर्व लक्षणसंपूर्णः स्वस्मान्नीय
नमः श्यत्रो ॥ ध्यानपूर्वकं ॥ ॥ चक्र
लज्जागमनया गुहाकालस्वान्थंथ
मं चूर्क ॥ मूलमनुष्या ऊर्लि ॥
नमः श्यमूर्ववः सुनासून नमः श्य

५५

॥ नमः श्यजगतामातृः तूदायैव न
दायिनी ॥ ॐ कां कीं दैवीया दैवीया
स्वर्गे नमः ॥ ३ ॥ ॐ नमो दैवी व
लकामिनी मिश्रवन्धननायनीये
लाकुविचित्रामिन्द्रादिग्वा

यूवेग धानिनी यस्तुच सुमथना
यनी स्वस्मानी मूलो नमः॥ ॥ ॐ
हृदयादिनयुजा ॥ ॐ जयाये नमः
॥ ॐ विजयाये २ ॥ ॐ ज्ञाजिगाये रा
ॐ ज्ञयनाजिगाये २ ॥ ॐ जम्भुन्ये २

॥ ॐ ह्नुम्भुन्ये २ ॥ ॐ माहि न्ये २ ॥ ॐ
ज्ञाकर्षण्ये २ ॥ ॐ शङ्कराय नूडाहा
कथनमः॥ ॐ शम्भुवाय पावनीस
हिगाय २ ॥ ॐ महादवाय मनाम
नीसहिगाय २ ॥ ॐ रुवाय वागीध

त्रीसहिनाय २॥ ॐ सर्वोयवामासहि
नाय २॥ ॐ मरुध्वनाय जूमिका
सहिनाय २॥ ॐ यमकायकायाय
नीसहिनाय २॥ ॐ मोलिनचन्द्रा
खनीसहिनाय २॥ ॐ स्नानवमहा

दवीसहिनाय २॥ ॐ जूवमूर्त्य
ॐ ध्वनीसहिनाय २॥ ॐ णिवायर
गवनीसहिनाय २॥ ॐ ॐ ध्वना
ययनाकिसहिनाय २॥ ॐ यनमा
सनक्षत्रीसहिनाय २॥ ॐ उग्रय

चिन्तामणिमहिगाय २॥ ॐ सर्वव्या
पिन स्वस्ती नीमूल्य २॥ ॐ अग्न्यदा
यनमः ॥ यज्ञं सर्वदाय २॥ साम वेदाय
२॥ अथर्ववेदाय २॥ मध्या ॥ स्वस्ती
न्ये २॥ अममहृदि न्ये २॥ वाक्कक्षाय

२॥ वाक्कक्षे २॥ जून्वनहृदाय २॥
वत्तवाय २॥ यापि न्ये २॥ स्वस्तीनीद
व्ये २॥ गंगमथे २॥ समूनाथे २॥ अम
दावथे २॥ सुनक्षत्रे २॥ नर्मदाथे
२॥ सिन्धवे २॥ कावथे २॥ वाग्म

श्री २॥ ॥ ज्वावाहनादि ॥ यद्वायवी
तपूष्यं नमः ॥ ॥ कनसपूजा ॥ ॐ सं
पूर्व कनसपूजाय नमः ॥ ॐ मृदुजया
य २॥ ज्मृगीध्वनाय २॥ हृदयाय
२॥ ॥ ज्वावाहनादि ॥ गायूजर्जनीयू

का १

स्वान ॥ ॥ मधियाहलपनसगर्भ्यं
स्मृत्कान्तिदा ॥ गायूकायननदि
दा ॥ चित्स्वान ॥ गर्भ्यपूजायाय ॥
ज्मृत्कान्तिदा ॥ गायूकायननदि
ॐ पूजाय नमः ॥ मध्व ॥ ॥ ज्मृ

वारुनादि ॥ ॥ यापकृष्णपूजा ॥ स
कनसमूहं त्या नमः ॥ जून नाशक
लनागनाश त्या नमः ॥ नदी त्या २ ॥
यापकृष्णय २ ॥ हृदयादि ॥ नादूज
डंका नादूखान ॥ ॥ यश्चैवल्लिपूजा

॥ ॐ अग्निगाड हें नवाय नमः ॥ नून हें
नवाय २ ॥ चक्षु हें नवाय २ ॥ क्रोध हें
नवाय २ ॥ उन्मत्त हें नवाय २ ॥ कपा
ली हें नवाय २ ॥ लीषम हें नवाय २ ॥
संहान हें नवाय २ ॥ ॥ आवाहना

दि॥ हाकुआलं ॥ ॥ सगूनपूजा ॥
ॐ अथ हाम्नेनमः॥ वलथ २॥ व्यासा
य २॥ रुनुमग २॥ विरीषधाय २॥
कृपाय २॥ यनधुनामाय २॥ मार्क
धुयाय २॥ ॥ अवाहनादिः गाय

आलं ॥ ॥ गणेशपूजा ॥ ॐ गणेशाय न
मः २॥ हलम्बाय २॥ मूषासनाय २॥
गणेशाय २॥ गजाननाय २॥
अद्विदाय २॥ नवदन्ताय २॥ लंबा
दनाय २॥ गंगासूनाय २॥ रुनसूना

य २॥ हलम्यनाधुय २॥ ॥ ज्वावा
हनादि ॥ भायू ॥ ॥ (मम) सयूजा ॥
कपिलादियंच (मम) नाट्या नमः ॥
नन्दार्थे २॥ हडाथे २॥ सुधी लाथे २
॥ सुमथे २॥ सुमनस २॥ ॥ ज्वावा रु

नादि ॥ ज्वावा सुताल ॥ ॥ कोमानीयू
जा ॥ उवका (मम) २॥ मारुव्यर्थे २॥
कोमार्थे २॥ वेपूथे २॥ वानाक्षे २॥
ॐन्डा (मम) २॥ वाम् लुमेथे २॥ मरुल
क्षे २॥ नवदूर्गार्थे २॥ ॥ ज्वावा रु

श्रीमद्भक्तिकवि

SHRI BHAKTI KAVI

1831

5



नादि ॥ झाडू डाल ॥ ॥ सूर्यादिभूजा
॥ ॐ ग्रा सूर्याय नमः ॥ ॐ नानाय नमः
य २ ॥ ॐ सदा शिवाय २ ॥ ॐ गुरुल
ॐ २ ॥ ॐ ॐ ददवताये २ ॥ ॐ हनु
म २ ॥ नाग नाऊ त्या २ ॥ ॥ ज्वावा

हनादि ॥ यभूका ॥ ॥ द्रखा विखा यू
जा ॥ वहि द्वा नाग एादि (गुहा) नमः ॥
सू नदव त्या २ ॥ कुलदव त्या २ ॥
सर्व त्यादव त्या २ ॥ ॥ ज्वावा रुना
दि ॥ ॥ दिया ऊ ऊं का ॥ यहाय
ति नी न जं का २

विल्वपत्र ॥ यद्वा नां च सह सुखसम्यग्दत्तं स्यात्फलं ॥ गत्वा
संतुष्टं पश्येत्तदा विवस्वतः ॥ ३ ॥

वीर्यं मूनिभिः प्रसूतं विष्णुना कृतं, यदु
कृतं मया देवि गृहाण सूनवन्दिता ॥

मालखान ॥ मालाकुन्दाकुसुमं धीरि
धिर्गंदवपूजितं, मालगी मूनिपूषाद्यै
दत्ता मादत्स्यार्चनी ॥ ॥ कया सुकृतं

कया पीकृतं ॥ दिव्याङ्गवस्तुनि वदन्ति
तुल्यं विचित्रवस्तुनि च संपद्यते, क
या सदानवनवस्तुलारं, एवं ह वैदवि
नमानमस्तु ॥ ॥ गत्वा न ॥ जूष्मकं
विल्वपत्रं च यकंदमनेन कथां वस्तु

यथा॥ न कृपया प्रदानादि नृकाषाधिकदातृवत्॥ न कृप
 प्रदानार्थं स्थानं सुदृढिगन्तुं वत्॥ उत्पल॥ नीलात्
 नमालिकाचैव तत्पूष्यकनेवीनेकं गृह्य
 गां दवददं शिः पूष्यमगानिचाष्टकं॥
 दं न॥ कंदर्यहस्तमं यानं यदि वंद
 मनं गुरुं गृह्यतां स रुद्राय ज्ञा
 नाग्न्यं सर्वकामदं॥ ॥ दुर्व॥ दुर्व
 मिव

कूलरु न यास्तु पूजा कालप्रयत्नं किं
 पूजा रुल्लक्षणं गुरुं सद्यः माया निमा
 नवशा॥ ॥ दिया जूझतं वारुल॥ दु
 वद्विगानि पूष्यं हि सर्वकिल्बिषना
 शिनी धनसकानधन्यादि गृह्यगां

संवत्सरां पंचमं दशमं य
 रक्तं ॥ दशानां लक्षणं सत्संज्ञं नाश

यत्रमध्वनि ॥ ॥ तुलसी ॥ यादवलि
नी ॥ ॥ रुल ॥ रुल ॥ विविधकाल
कदलीयनहादिकं ॥ ॥ दूधूदूदिनस
सं गृहाद्ययनमध्वनि ॥ ॥ गवल ॥
सर्वसोराग्यसंपरिनाजसंपत्त्युय
पूगीरुसंचनामुलंमखसंस्कारसंयतां ॥

कपरादिसमायुक्तस्वस्वामोचनिजदयार
हवंगुनाम(१५)कविनामयनाम
लंयुगिगृहार्ता ॥ ॥ धलिका ॥ नेव
द्यंशितिक्रियुक्तमान्दकिंशानदीजि
व्युगणार्कनसायुक्तं पुदलमिद
मीध्वनि ॥ ॥ मरि ॥ सैरुवजवचू

(धर्मनः धृतेषु पादिकसु धर्मः शर्क नास
दिने ४ पूर्यं पक्वान् पुनिगृह्यतां ॥ ॥
धूपः ॥ वनस्य गिरि सात्यन् नानाग
(ध्वेष्ट्य सैयुगं आद्या लं सर्वदेवानां धू
धायं पुनिगृह्यतां ॥ शास्त्रसूनीमुखे

धूपं समर्पयामि ॥ ॥ दीयः ॥ सुषका
धममहागजः सर्वपुनिमिनायकं स
वाकास्यनरं कातिदीपायं पुनिगृह्य
तां ॥ भादनीरुय ॥ गतः शादिवपू
जने ॥ ॥ कृतयुगमयनमः ॥ श्रुतायू
चतुर्ध्वग्यातमः

ॐ न्यादिदक्षला कपालस्थितमः
मय २॥ दायनयूमय २॥ कलियूम
य २॥ ॐ न्यायनमः॥ जून्तय २॥
यमाय २॥ नैम्याय २॥ वनून्मय २॥
वायव २॥ कूर्वनय २॥ ॐ दक्षनाय
२॥ विष्णु २॥ विष्णुव २॥ जूवत्कामि
नवग्रहस्थानमः॥ मङ्कगुस्थानमः॥ गाय २
मिथिस्थानमः॥ नाभिस्थानमः॥ कर्कस्थ २
२॥ बलथ २॥ वासाय २॥ रुन्मन मङ्क
२॥ विहीषस्थ २॥ कृपाचार्याय २॥
यनशुनामाय २॥ मार्कस्थ २॥
आदिगाय २॥ शोमाय २॥ जून्मना
य २॥ वृक्षाय २॥ वृक्षस्थ २॥ शु

काय २॥ शानिस्थनाय २॥ नारुर्व २॥
कनव २॥ जन्मन २॥ अग्नि (स्थे) २॥
हन (स्थे) २॥ कर्लिकाथे २॥ नारि (स्थे)
२॥ मृगशिराथे २॥ आदाथे २॥ पुन
र्वसु २॥ पूषाथे २॥ अश्लेषाथे

२॥ मघाथे २॥ पूर्वफाल्गु (स्थे) २॥ उरु
नफाल्गु (स्थे) २॥ रुक्माय २॥ चित्राय
२॥ स्वाथे २॥ विश्वामास २॥ अनूना
माय २॥ कृष्णाय २॥ मूलाय २॥ पूर्वा
षाढाय २॥ उरुनाषाढाय २॥ अ

हितिग २॥ शुवक्षय २॥ धनक्षय
२॥ शतहियाय २॥ पूर्वहदाय २॥ उ
रुनहदाय २॥ भवथे २॥ विस्फु
य २॥ शीतथ २॥ आयुष्म २॥ शीत
क्षय २॥ (शुभ) नाय २॥ अतिगन्ध
य २॥ सुकर्मक्ष २॥ धृतथ २॥ शुल

य २॥ गन्धय २॥ वृद्धय २॥ ध्रुवा
य २॥ वाद्यागाय २॥ रुषक्षय २॥
वज्राय २॥ शुद्धय २॥ वागियागाय
२॥ वलिया नाय २॥ पतिद्याय २॥
जिवाय २॥ सिद्धय २॥ साक्षाय २॥

शुल्लय २॥ शुक्लाय २॥ वक्र (६) २॥ ने
न्याय २॥ वैधृतय २॥ मिषाय २॥ वृषा
य २॥ मिथूनाय २॥ कर्कटाय २॥ सिं
हाय २॥ कन्याय २॥ तुलाय २॥ वृ
श्चिकाय २॥ धनुष २॥ मकराय २॥

कूफाय २॥ मीनाय २॥ यदिपदा
य २॥ द्वितीयाय २॥ तृतीयाय २॥
चतुर्थे २॥ पञ्चमे २॥ षष्ठे २॥ सप्त
मे २॥ अष्टमे २॥ नवमे २॥ दश
मे २॥ एकादशे २॥ द्वादशे २॥

यत्तु मानि नां शास्त्रा नीव न सा
हुना मिद्विकाम मया शास्त्रा
नी सूर्ये यं दमर्था गृहोदास्त्रादा
॥ दायक ॥ जूथो यं दवदव मि
पूष्पार्थमवगात्रकं । गृहोदास्त्रा
मया दत्तं पुत्री दय न मध्यनि ॥ ॥

दवदवाय् का ग्यायनी नमस्तुते ॥
नमस्तुस्तु नवचैव रुद्राद्यै नमः
नमः ॥ नमस्तुस्तु नाथति अदि
जायै नमानमः ॥ ४॥ कनाय नमः
स्तुस्तु कालनाथि नमानमः ॥ नमस्तु
स्तुस्तु वाथति (मेथ्यै धायै नमानमः

सु
४॥ ४॥ स्तुवाय नमस्तुस्तु कामध्वयै
नमानमः ॥ पिङ्गलाय नमस्तुस्तु
नाथै नमानमः ॥ रुद्राय च नमः
स्तुस्तु आय्यै ध्वयै नमानमः ॥ ५॥
४॥ नाय नमस्तुस्तु प्रकृष्यै च नमा
नमः ॥ उग्राय च नमस्तुस्तु रुवा

नमो च नमानमः॥ नमस्तु वन्द्यमूर्ति
च यावद्योचनमानमः॥ सर्वयाय
विनिर्मुक्तः॥ जिवलाकमदीयते॥
वन्द्यदवयुनादीन्मनममगुर्नर
नमस्तु नमस्तु निर्गमः॥ नमस्तु नमस्तु
विभुवननमिर्गसर्वसर्वेकनाथः॥

निर्गमनिर्विकारं वज्रनमन
दीर्घदायैर्विमुक्तं आगमसंकेतमा
द्यं विगुणविनशितं गंपय द्रव्य
रूपं॥ ॥ कलशया॥ नलोषधी
सकनतीर्थजलनपूर्वस्वच्छय
स्त्वसुः॥ हरितयुष्मा येरूप्या

ह्रविषयमूनिरियससं गंरुम
लिं शिवशक्तियूक्तं नमामि ॥ ॥

यायकृष्णया ॥ नमस्तु धर्मकृष्ण
य्यापिनीयतनायच्यापिनी
भाक्तनार्थय्यायकृष्णयतनम
४॥ ॥ वलिया ॥ नित्यानन्दकन

शमनं निर्विकारं निनामय्या
मातीनं यत्र शमनं तेन वक्तं नमाम्य
हं ॥ ॥ गद्यया ॥ विष्णुश्च नायवी
नाय विष्णुनूपायतनम ४। सर्व
विष्णुनन्दवं सर्वशक्तिनभाक्त
तं ॥ ॥ सगद्यया ॥ जूष्णकामा

वलियासाः नूमानश्च विहीषत्
४। कयायनः नूमायः मार्कः (तु
यायनं नमः ॥ ॥ कोमानीया ॥ को
मानीमयूनातूडा नकांभीनकावा
मिनी। शकद्विन्दूमुडाव मुक्ति
धनीनभासुगं ॥ ॥ (गमग्राया ॥

नमस्तु कपिलदेवि नमस्तु सून
पूजिगं। यविर्गु सर्वदा (धनू पूजि
नश्च नमाम्यहं ॥ ॥ याया दंयाय
कर्मादं यायात्मायायसंभुव। श
दिमांयुधुनीकादु सर्वयायदना
रुव ॥ जून्वाशुशानदीनासि त्वम

वक्षानर्धमम। नस्मात्कान्त एताव
न् नक्षमाय नमः धनी ॥ ॐ नमः
वनभासुस्यं कुलदेवनमानमः
॥ स्तनदेवगुहासर्वपूजागृहं
नमानमः ॥ यथावानपुहानात्
कवचमुवतुवानर्धं तथादेव

विद्यानातां शान्तिर्मुवतुवानर्धं
॥ यजमानातीत्यस्तनीवगविधि
जुगुगन्धयुष्यधूपयीयः कुलने
वद्यादिगत्सर्वविधियनिपूर्व
मस्तु ॥ नमस्तु नयाय ॥ ॐ

र्थनायाय ॥ रुमवर्धुविदिगांभी
दिनर्गानवजीवनी । यद्वासनम
गानिर्गो स्वस्वानीयवसदा ॥
मधुलविसर्जनं मधुलसचोद
मुत्थानचूतक ॥ ॥ वासनका

य ॥ ॥ वादनसमुदा ॥ दक्षिण ॥
नामलिकाय ॥ ॥ विसर्जनमा
यः अस्ति ॥ उँ उद्वयंक ॥ कल
हारिषकः समुदा भादनीय
वस्तुकायः सकलानन्दनः ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय